रिकार्ड–हमारे तीर्थ न्यारे हैं.....ओमशांति प्रातःक्लास 14–7–67
बच्चों ने यह गीत सुना। बच्चों की नालेज की प्वाइंट्स देखने के लिए कि कहां तक है,कैसे अर्थ करते हैं फिर ऐसे2 गीत निकालकर एक2 से अर्थ करवाना चाहिए ;क्योंकि इन गीतों को भी करैक्ट किया जाता है ना। इसका अर्थ बाप ही बैठ समझाते हैं। बच्चों को सिखाने लिए भी यह काम आता है। जो अच्छे2 रिकार्ड्स हैं वो सेंटर्स में रखकर फिर उनका अर्थ करवाना चाहिए। बाबा ने समझाया है कि कई ऐसे2 गीत हैं अगर फिकरात में कब बैठे हों तो वो गीत खुशी में ला देवें। बहुत मदद करेंगे। यह बहुत काम की चीज है। गीत सुनने से ही झट स्मृति आ जावेगी। खुशी आ जावेगी। तुम बच्चे जानते हो कि बरोबर हम इस धरनी के लक्की स्टार्स हैं। हमारे यह तीर्थ भक्तिमार्ग वालों से बिल्कुल न्यारे हैं। तुम हो पांडव सेना। हर एक ग्रुप का अलग पण्डा होता है ,जो कि ले जाते हैं। उनके पास डायरी रहती है। पूछते हैं कि किस कुल के हो?हर एक अपने कुल वालों को ही लेंगे। कितने पण्डे लेकर जाते हैं। अभी तुम रुहानी पण्डे हो। तुम्हारा तो नाम ही है पांडव सेना। पाण्डवों की राजधानी नहीं है। पाण्डव तो पण्डे को कहा जाता है। बाप भी बेहद का पण्डा है। गाइड को भी पण्डा कहेंगे। पण्डे ले जाते हैं तीर्थों पर। पुजारी लोग जानते हैं कि यह पण्डे ले जाते हैं यात्राओं पर। ज्ञान मार्ग में भी तुम पण्डे बनते हो। इसमें कहीं ले जाने की बात नहीं है। घर में बैठे2 भी तुम रास्ता बताते हो। फिर किसी को बताते हो तो वो पण्डा बन जाता है। एक/दो को रास्ता बताना ही है मनमनाभव। तुम्हारे में तो बहुत होंगे जिन्होंने तीर्थ किये होंगे। बद्रीनाथ,अमरनाथ में कैसे जाना होता है। पण्डे लोग भी जानते हैं। तुम हो रुहानी पण्डे। यह तुम भूलो मत। हम पुरुषोत्तम संगमयुगी हैं। तुम ब्राह्मणों के एक ही बात बुद्धि में है कि हम मुक्तिधाम के पण्डे हैं। ऐसे नहीं कि स्वर्ग के पण्डे कोई अलग हैं, मुक्ति के अलग हैं, नहीं। तुमको यह निश्चय है कि हम मुक्तिधाम में जाकर फिर नई दुनियां में आवेंगे। तुम नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पण्डे हो। पण्डे भी अनेक प्रकार के होते हैं। कोई2 तो वैश्यालय का रास्ता भी बताते हैं। वहां ही फिर वो यात्रा भी है। वहां ही फिर जहन्नम की यात्रा कराते हैं। तुम तो फर्स्टक्लास पण्डे हो। सबको पवित्रता का ही रास्ता बताते हो। सबको पवित्र रहना है। दृष्टि ही बदल जाती है। तुमने प्रतिज्ञा की है कि हम सिवाय एक के और कोई को याद नहीं करेंगे। बाबा,हम आपको ही याद करेंगे। आपका बनने से हमारा बेड़ा पार हो जाता है। भविष्य में तो सुख ही सुख है। बाप हमको सुख के सम्बंध में ले जाते हैं। अथाह सुख है। यहां पर तो दुःख ही दुःख है। यहां का सुख भी काग विष्टा समान है। तुम पढ़ते ही हो नई दुनियां के लिए। तुम जानते हो कि वापस मुक्तिधाम में जो जोवेंगे हम तो फिर जीवनमुक्तिधाम में आवेंगे। घर में तो जरूर जावेंगे ना। यहां पर आना है वाया शांतिधाम। यह है दुःखधाम। यह यात्रा है याद बल की। शांतिधाम को भी याद करना होता है। बाप को भी याद करना होता है और बाप के साथ ईमानदारी भी चाहिए। बाप कहते हैं कि ऐसे नहीं कि मैं तुम्हारे अंदर को जानता हूँ, नहीं। तुम जो एक्ट करते हो उस पर बाबा समझाते हैं ,पुरुषार्थ करवाते हैं। बाकी तुम कोई अवगुण वा पाप करते हो तो पूछा जाता है कि कोई पाप तो नहीं किया है। बाप ने समझाया है कि आंखें बहुत धोखा देती हैं। यह भी बताना चाहिए बाबा ,आज आंखों ने हमको बहुत धोखा दिया है। बाबा, हम किसी स्त्री को बहन नहीं समझते हैं। यहां पर तो डर रहता है। घर में जाता हूँ तो मेरी बुद्धि चलायमान हो जाती है। बाबा यह हमारी बहुत भारी भूल है। क्षमा करो। बाबा कहते हैं कि क्षमा की तो इसमें कोई बात ही नहीं है। यह तो दुनियां में मनुष्य करते ही हैं। कोई ने चमाट मारा तो कहा कि क्षमा करो तो काम ही खलास। ऐसे माफी मांगने में देरी थोड़े ही लगती है। बुरा काम कर लो फिर कह दो आई एम सॉरी। ऐसे थोड़े ही चल सकता है। यहां पर तो सारा जमा होता है। कोई उल्टा–सुल्टा काम करते हो तो वो झट जमा हो जाता है। जिसका ही फिर अच्छा–बुरा फल दूसरे जन्म में मिलता है। क्षमा की बात नहीं है। जो जैसे करते हैं वैसा ही

पाते हैं। बाबा बार2 समझाते हैं। एक तो कहते हैं कि काम महाशत्रु है। यही तुमको आदि–अंत दुःख देता है। ऐसे नहीं कहते हैं कि क्रोध महाशत्रु है। बाप को कहते ही हैं पतित–पावन। पतित विकार में जाने वाले को ही कहा जाता है। यहां बाप समझाते रहते हैं। यहां से फिर बाहर में जाते हैं तो इतनी परहेज में नहीं रह सकते हैं। तो फिर उंच पद पा नहीं सकेंगे। बाबा समाचार तो सारा सुनते रहते हैं ना। यहां तो बहुत अच्छा2 काम करते हैं। फिर बाहर में जाने पर कुछ भी धारना नहीं रहती है। बाबा पूछते भी हैं। तुम्हारे मां–बाप कहां सोते हैं?तुम कहां पर सोते हो?बॉम्बे में एक ही छोटे से कमरे में मां–बाप ,बच्चे सभी सोते हैं। तो...मां–बाप जरूर विकार में जावेंगे। तो बच्चों पर तो बुरा असर पड़ेगा ना। सतयुग में तो ऐसी बातें ही नहीं होती हैं। यह तो अभी भारत का यह हाल है। वहां पर तो बड़े2 महलों में रहते हैं अथाह सुख होता है। तो बाबा बच्चों से भी सब पूछ लेते हैं। बाबा को समाचार तो देना है ना। कोई तो झूठ भी बोलते हैं। विचार करना चाहिए कि हम किसके साथ झूठ बोलते हैं। इनसे तो बिल्कुल ही झूठ नहीं बोलना चाहिए। बाबा तो सच्चा बनाने वाला है। बाकी दुनियां में जो कुछ भी सुनते हो वो सब झूठ बोलने बनाने वाले हैं। वहां झूठ होता ही नहीं है। यहां पर फिर सच्च का नामोनिशान नहीं है। फर्क तो रहता है ना। बाप कहते हैं कि यह कांटों का जंगल है ;परंतु अपने को कांटा समझते थोड़े ही है। बाप कहते हैं कि काम कटारी चलाना यह सबसे बड़ा कांटा है। इसको भी कोसखाना कहा जाता है। हर जन्म में एक/दो का कोस करते विकारी बनते आये हैं। तभी तो बाप को पुकारते हैं ना। पुण्यात्माओं की दुनियां में कोई पुकारते नहीं हैं। बाप समझाते हैं कि जबकि मैं आया हूं तुमको ले जाने लिए सुखधाम में तो पावन बनना चाहिए ना सो ही पावन बनो। भगवान को बुलाते हैं कि शिवबाबा आपसे तो सुख घनेरे मिलते हैं। भक्तिमार्ग सभी इनको पुकारते हैं। बच्चे जानते हैं कि बरोबर बाबा सुख घनेरे देकर गये थे। वो तो है ही सुखधाम। वहां पर बीमारियां आदि होती ही नहीं हैं। हास्पिटल ,जेल आदि होती नहीं हैं। सतयुग में दुःख का नाम नहीं है। त्रेता में दो कला कम हो जाती है तो थोड़ा कम होता है तो भी हेवन तो कहा ही जाता है ना। बाप कहते हैं कि तुम बच्चों को अथाह अतिइन्द्रिय सुख रहना चाहिए। पढ़ाने वाले को भी याद करना है। भगवान हमारा टीचर है। टीचर को तो सभी याद करते हैं ना। यहां पर रहने वाले बच्चों के लिए तो बहुत सहज है। यहां पर कोई बंधन तो है नहीं। बिल्कुल निरबंधन हैं। शुरू में ही जब भट्ठी बनी थी तो ही निरबंधन हो गये थे। ओना वा फुरना तो अब सिर्फ सर्विस का ही है। सर्विस कैसे बढ़ावें इस पर बाबा बहुत समझाते रहते हैं। बाबा के पास आते हैं तो मास,डेढ़ मास तक बहुत उमंग में रहते हैं। फिर देखो ठंडे पड़ जाते हैं। सेंटर पर ही नहीं आते हैं। अच्छा, फिर क्या करना चाहिए?लिखकर भी पूछ सकते हो। क्यों नहीं आते हो?हम समझते हैं कि शायद माया ने आप पर वार किया है या किसी के संग में फंसे हो वा कोई विकर्म किया है। गिर पड़े हो तो भी उठना तो चाहिए ही ना। फिर पुरुषार्थ करना चाहिए। दिल से होता है। तुम चिट्ठी लिख सकते हो। बहुतों को लज्जा आती है तो फिर फां हो जाती है। यहां से भी होकर जाते हैं। फिर समाचार आता है कि घर में बैठ गये हैं। कहते हैं कि मेरी दिल हट गई है। कोई तो पत्र में भी लिखते हैं कि आपका ज्ञान तो बहुत अच्छा है ;परंतु हम पवित्र नहीं बन सकते हैं। इसलिए छोड़ दिया। मेरे में इतनी ताकत नहीं है। साफ लिख देते हैं। विकार देखो कैसे गिरा देते हैं। यहां हाथ भी उठाते हैं कि हम सूर्यवंशी नर से नारायण बनेंगे। यह नालेज ही है नर से नारायण ,नारी से लक्ष्मी बनने की। बाबा कहते हैं गुड़ जाने गुड़ की गोथरी जाने। यह ;साकार रथद्धबाबा की बैग है ना। यह अच्छी तरह से पूछते हैं। इनके पास समाचार भी आते हैं। वो शिवबाबा तो कहते हैं कि मैं पढ़ाने आता हूँ। जो पढ़ेंगे लिखेंगे वो होंगे नवाब। बाप कहते हैं दृष्टि को तो बहुत बदलना है। कदम2 पर खबरदारी चाहिए। .....

.....तुम जब तक यात्रा पर हो पवित्र रहते हो। कोई तो यात्रा पर भी ऐसे शौकीन जाते हैं जो शराब भी अपने साथ ले जाते हैं। छुपा कर रख देते हैं। बड़े2 आदमी भी ले जाते हैं। इन बिना रह नहीं सकते हैं। अभी वो तीर्थ क्या काम का रहेगा?लड़ाई वाले भी बहुत शराब पीते हैं। शराब पीकर जाकर एरोप्लेन सहित जाकर गिरते हैं। लड़ाई में शराब बहुत काम में आता है। शराब पीकर तो जैसे कि बादशाहद बन जाते हैं। एक तरफ दिवाला। एक तरफ शराब पीकर बहुत नशे में चढ़ जाते हैं। दिवालापन ही भूल जाते हैं। अभी तुमको मिलता है ज्ञानअमृत। बाकी याद की ही है मुख्य बात। जिससे ही तुम 21जन्म लिए एवर हैल्दी,एवर वैल्दी बनते हो। बाबा ने कहा था कि यह भी लिख दो कि 21जन्म लिए एवर हैल्दी,एवर वैल्दी कैसे बन सकते हैं वो आकर समझो। भारतवासी जानते हैं बरोबर भारत की बड़ी आयु थी। स्वर्ग में कब कोई बीमार नहीं होते हैं। स्वर्ग में देवी देवताओं के 150वर्ष आयु थी। 16कला सम्पूर्ण थे। कहते हैं भला यह कैसे हो सकता है?बोलो यहां पर पांच विकार होते ही नहीं हैं। वहां भी अगर यही पांच विकार हो तो रामराज्य किसको कहेंगे। देवतायें जब वाममार्ग में जाते हैं तो भी चित्र तुमने देखे हैं। बहुत गंदे चित्र देते हैं। फिर बाबा यह वाला कहते हैं कि हमने जो देखा है वो बताते हैं। शिवबाबा कहते हैं कि मैं तो सिर्फ नालेज ही देता हूँ। बाकी इसने जो देखा है वो यह सुनाते हैं। वो ज्ञान की बातें यह अपने अनुभव की बातें सुनाते रहते हैं। दो हैं ना। यह भी अपना बताते रहते हैं। हर एक को अपनी लाइफ का पता है। तुम जानते हो आधा कल्प से पाप करते आये हो। वहां फिर कोई पाप नहीं करेंगे। यहां पावन कोई है नहीं। सन्यासी भी पैदा तो विकार से होते हैं ना। और भी बहुत उनसे पाप होते हैं। गुरू बनकर कहते हैं कि भगवान सर्वव्यापी है। सबको बेमुख कर देते हैं तो कितना बड़ा पाप है। इसलिए ही उनका नाम हिरण्याकश्यप पड़ जाता है। सब बातें अभी की ही हैं। अभी भागवत भी चल रहा है। भगवान बैठ बच्चों को नालेज सुनाते हैं। वास्तव में होनी तो चाहिए एक ही गीता। बाकी शिवबाबा की बायोग्राफी क्या लिखेंगे?यह भी तुम जानते हो कोई भी किताब आदि कुछ भी रहेगा ही नहीं ;क्योंकि विनाश सामने खड़ा है। फिर यह पुरुषार्थ की नालेज भी खतम हो जावेगी। फिर प्रारब्ध शुरू हो जाती है। जैसे ड्रामा में जो पास्ट हो जाता है वो रील फिर जाता है। फिर नये सिर शुरू होता है। इतने सब आत्मओं में अपना2 ड्रामा का सारा पार्ट नूंधा हुआ है। यह है बेहद का नाटक। तुम कहेंगे हम तुमको बेहद के नाटक की आदि,मध्य,अंत का राज बताते हैं। वो है निराकारी दुनियां। यह है साकारी दुनियां ।हम तुमको सारा राज समझाते हैं कि यह चक्र कैसे फिरता है। जिनको तुम समझावेंगे उनको बहुत मजा आवेगा। ऐसे मत समझो कि कोई सुनता नहीं है। प्रजा बहुत बननी है। हार्टफेल सर्विस करते नहीं होना है। तुम समझाती ही रहो। व्यापारियों के पास ग्राहक तो बहुत आते हैं। तो आओ हम तुमको बेहद का सौदा दें। भारत में देवताओं का राज्य था फिर कहां गया,कैसे 84जन्म लिये आओ तो हम तुमको समझावें। भगवानोवाच्य तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। आओ तो हम बतावें। पहले तो तुम पवित्र महाराजा थे। फिर अब पतित बने हो। अब फिर पावन बनने का पुरुषार्थ करो। बाप को याद करो। पांच हजार साल पहले भी कहा था कि बाप को याद करो। हम ;होताद्धतो ऐसे करता। बाबा समझाते तो रहते हैं ना कि ऐसे2 सर्विस करो। तुम्हारे ग्राहक ऐसी2 बातें सुनकर बहुत खुश होंगे। तुमको भी माथा टेकेंगे। शुक्रिया मानेंगे। व्यापारी लोग तो और भी जास्ती सर्विस कर सकते हैं। व्यापारी लोग तो धर्माउ भी निकालते हैं। तुम तो बहुत बड़े धर्मात्मा हो ना। बाप आकर तुम्हारी झोली भर देते हैं अविनाशी ज्ञान रत्नों से। गुडमार्निंग।